Q→ समाजशास्त्र की परिभाषा दीजिए। समाजशास्त्र की विषय-वस्तु का उल्लेख करें।
(Define sociology. Discuss the subject matter of sociology.)

Ans→ Sociology लैटिन भाषा के socio तथा ग्रीक भाषा के logus शब्दों से मिलकर बना है। Socio शब्द का अर्थ है समाज तथा Logus शब्द का अर्थ विज्ञान। जितना अपना समाज प्राचीन है उतना समाजशास्त्र प्राचीन है किन्तु बात ऐसी नहीं है। समाजशास्त्र सभी समाज विज्ञान में नवीन है इसका जन्मदाता आगस्त काम्टे (Auguste Comte 1798-1857) को माना जाता है।

समाजशास्त्र का विकास भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में हुआ है अतः समाजशास्त्री इसकी परिभाषा व विषय वस्तु के विषय में एकमत नहीं हैं। भिन्न भिन्न समाजशास्त्रियों ने भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से समाजशास्त्र को परिभाषित किया है। यही कारण है कि आज तक समाजशास्त्र की कोई एक सर्वमान्य परिभाषा नहीं बन पाई है। जिन दृष्टिकोणों को अपनाकर समाजशास्त्र को परिभाषित किया गया है वे निम्नलिखित हैं।

गिन्सबर्ग (Ginsberg) "समाजशास्त्र मानवीय अन्तः क्रियाओं, पारस्परिक सम्बन्धों तथा इनकी दशाओं और परिणामों का अध्ययन है।" "Sociology is the study of human inter-actions and inter-relations the condition and consequences.)"

2

वार्ड (Ward) "समाजशास्त्र समाज का विज्ञान है।" (Sociology is the ~~knowledge of human~~ science of society.)

गीडिंग्स (Giddings) "समाजशास्त्र पूर्ण रूप से किया गया समाज का क्रमबद्ध वर्णन और व्याख्या है।" (Sociology is the systematic description and explanation of society viewed as a whole.)

मैकाइवर (MacIver) "समाजशास्त्र की विषय-वस्तु सामाजिक सम्बन्ध है।"

दुर्खीम (Durkheim) के अनुसार "समाजशास्त्र सामूहिक प्रतिनिधित्व का विज्ञान है।"

मैक्स वेबर (Max Weber) के अनुसार "समाजशास्त्र वह विज्ञान है जो कि सामाजिक कार्य का आनुप्रमाणक बोध कराने का प्रयास करता है।"

किम्बल यंग (Kimbal Young) के अनुसार "समाजशास्त्र मानव समूहों के व्यवहार का अध्ययन करता है।"

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि समाजशास्त्र हमारे समाज में होने वाले सभी प्रकार की आपस में मनुष्य के द्वारा जो भी क्रिया-कलाप किए जाता है उसी के अध्ययन को समाजशास्त्र कहा जा सकता है। और समाज में आपसी व्यवहार को क्रिया को समाजशास्त्र की संज्ञा दिया जाता है।

इस तरह से इसके विषय वस्तु निम्नलिखित होता है।

समाजशास्त्र की विषय-वस्तु (Subject matter of sociology) जहाँ तक समाजशास्त्र की विषय वस्तु का प्रश्न है, समाजशास्त्री इस विषय पर भी एक मत नहीं है। वास्तव में समाज इतना व्यापक विषय है, कि इसके विभिन्न पहलुओं पर अन्य सामाजिक विज्ञानों द्वारा भी अध्ययन किया जाता है। ऐसी स्थिति में यह निश्चित करना कि समाजशास्त्र समाज के सभी पहलुओं अथवा किसी एक पहलू पर अध्ययन करेगा। निःसन्देह यह कठिन कार्य है। जब समाजशास्त्र की परिभाषा पर सभी समाजशास्त्री एकमत नहीं हो पाए हैं तब इसकी विषय-वस्तु पर समाजशास्त्रियों के बीच मतभेद होना स्वाभाविक है। समाजशास्त्र की विषय वस्तु की अनिश्चितता पर अपने विचार प्रकट करते हुए प्रोफेसर डी० एफ० कालवर्टन ने कहा है कि "क्योंकि समाजशास्त्र एक लचीला विज्ञान है, इसलिए यह निश्चित करना बिलकुल कठिन है कि इसकी सीमा कहाँ से प्रारंभ होती है तथा कहाँ समाप्त होती है, कहाँ सामाजिक मनोविज्ञान समाजशास्त्र हो जाता है तथा कहाँ अर्थशास्त्र हो जाता है तथा कहाँ अर्थशास्त्र का सिद्धान्त समाजशास्त्र की शाखा बन जाता है। अथवा जैविकीय सिद्धांत समाजशास्त्रीय सिद्धान्त बन जाता है। Since sociology is so elastic a science it is difficult to determine just where its boundaries begin and end: where sociology becomes social phychology or social psychology become sociology, or where economic